"जयोदय महाकाव्य में वर्णन वैशिष्टय"

Part -3 (Art, Culture & Literature)
Chapter-II
Mav/Vol.1.0/Issue-I

ISSN CODE : 2456-1045 (Online)
(ICV-ACL/Impact Value): 2.12
(GIF) Impact Factor : 2.011
Copyright@IJF 2016
Journal Code : ARJMD/ACL/V-1.0/I-1/May-2016
website : www.journalresearchijf.com
Received : 01.05.2016
Accepted : 12.05.2016
Date of Publication :31.05.2016
Page: 21-25

Name of the Author:

पूनम साहू
शोध छात्रा
संस्कृत दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग
वनस्थली विद्यापीठ

जयोदय महाकाव्य आचार्य भूरामल शास्त्री द्वारा रचित महाकाव्य है। संस्कृत साहित्य में महाकाव्यों की एक सुदीर्घ परम्परा है। 'महाकाव्य' के लक्षण व नियमों पर साहित्य शास्त्रीय ग्रंथों में सविस्तार विवेचन किया गया है–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः।
सद्वंशः क्षत्रियोवापि धीरोदात्तगुणान्वितः।।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवो•पि वा।
शृन्नारवीरशान्तानामेको•न्यो रस इष्यते।
आन्ननि सर्वे•पि रसाः सर्वे नाटक सन्धयः।।

अर्थात् महाकाव्य सर्गबद्ध होना चाहिए। इसमें महाकाव्य का नायक कोई देव या सत्कुलोत्पन्न क्षत्रिय होता है। वह धीरोदात्त गुणी हो या एक ही वंश में उत्पन्न नैक सत्कुलीन राजा लोग भी हो सकते हैं। मुख्य रूप से शृन्नार, शान्त व वीर रस में से कोई एक रस होना आवश्यक है। महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की भावना से ओत–प्रोत रचना ऐतिहासिक व लोक प्रसिद्ध हो सकती है।

महाकाव्य में मुख्य रूप से ऋतु, वन, सूर्योदय, चन्द्रोदय, दिवस, रात्रि, काल, पर्वत, सागर व यज्ञ–याज्ञादि सहित विवाह, राजा, अमात्य व युद्धादि का वर्णन होता है। एक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग अपेक्षित है, किन्तु सर्गान्त में छन्द परिवर्तन किया जा सकता है। 8 सर्गों से कम होने पर महाकाव्य नहीं कहा जा सकता।

जयोदय महाकाव्य 28 सगो में निबद्ध है। जयोदय महाकाव्य में विविध स्थलों का और वृत्तान्तों का सुन्दर वर्णन किया गया है। कवि ने महाकाव्य में सूर्योदय, चन्द्रोदय, प्रभात, आकाश, पर्वत आदि का मनोहारी वर्णन प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त युद्ध, नगर, विवाह मण्डप, नदी का वर्णन भी जयोदय महाकाव्य में देखने को मिलता है। जयोदय महाकाव्य के वर्णन वैशिष्ट्य को संक्षिप्त रूप में इस प्रकार देख सकते है :–

सूर्योदय वर्णन – कवि ने जयोदय महाकाव्य के पन्द्रहवें सर्ग में सूर्योदय का वर्णन प्रस्तुत किया है। कवि सूर्य की तुलना महापुरुषों से करते हुए कहते हैं

यथोदये•हयस्तमये•पि रक्तः श्रीमान् विवस्वान्विभैकभक्तः।
विपत्सु सम्पत्स्वपि तुल्यतेवमहो तटस्था महतां सदैव।।
(ज.म. 15/2)

अर्थात् सूर्य जिस प्रकार उदय काल में लाल होता है, उसी प्रकार अस्त काल में भी लाल रहता है। महापुरुषों की प्रवृत्ति संपति और विपत्ति में सदा तटस्थ हाती है। तात्पर्य यह है कि महापुरुष न सम्पत्ति में अनुरक्त होते है और न ही विपत्ति में उद्विग्न होते हैं।

कवि सूर्योदय की स्वभाविक स्थिति का वर्णन प्रस्तुत करते हुए कहते हैं।

उपागते•हस्कृति तस्य वीनां कलै कृतातिथ्य कथाप्यशीना।
श्रीशोणिमच्छद्ममयं प्रतीची दधाति सच्छटकमात्तवीचिः।।
(ज.म. 15/6)

अर्थात् जिस प्रकार प्रवास से पति के आने पर बुद्धिमान स्त्री पहले कुशल समाचार पूछकर पति का आतिथ्य करती है, उसके बाद प्रसन्नता के साथ सौभाग्य सूचक लाल साड़ी पहनती है, उसी प्रकार पश्चिम दिशारूपी स्त्री ने सूर्य रूपी वल्लभ के आने पर पक्षियों की मधुर आवाज से स्वागत किया। बाद में लालिमा के छल से सौभाग्य सूचक लाल साड़ी पहनी।

चन्द्रोदय वर्णन – कवि ने महाकाव्य में चन्द्रोदय का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है। एक उदाहरण प्रस्तुत है।

तमस्विनीज्योत्स्निकयोः प्रसत्तिसंवादवाडीव विधुबिभर्ति।
सितासितप्रायमुतात्मकायं द्विच्छायमङाङनयोरिहायम्।।
(ज.म. 15/61)

कवि ने चन्द्रमा के स्वभाव के बारे में कहा है कि चन्द्रमा स्वभाव से शुक्ल है और बीच में कलय से युक्त होने के कारण काला है। इससे ऐसा जान पड़ता है कि वह चाँदनी को खुश रखने के लिए शुक्ल और रात्रि को खुश रखने के लिए कृष्ण कान्ति से युक्त शरीर को धारण करता है।

चन्द्रमा के विषय में कवि विविध कल्पनाएँ करता है।
चण्डीशचूडामणिरेष भर्ता कुमुद्वती नां स्मरसन्निधर्ता।
मित्रं समुदस्य च पूर्वशैल–शृन्त्रे सोमः कलशायते•लम्।।
(ज.म. 15/57)

अर्थात् वह चन्द्रमा महादेव का मुकुटमणि है, कुमुदिनियों का पति है, कामदेव का निकटवर्ती है और समुद्र का मित्र है ऐसा यह चन्द्रमा पूर्वांचल रूप प्रासाद की शिखर पर कलश के समान अत्यन्त सुशोभित हो रहा है।

रात्रि वर्णन – जयोदय महाकाव्य में कवि ने सूर्योदय व चन्द्रोदय वर्णन के साथ–साथ रात्रि वर्णन प्रस्तुत किया है।

नष्टे•पि पत्यौ तरणौ द्युरामा सुधांशु मारादभिसर्तुकामा।
समुत्तरीतुं परिवादघाटीं तमोमयीं वा विदधाति शारीम्।।
(ज.म. 15/27)

आकाशरूपी स्त्री ने सूर्यरूपी पति के नष्ट हो जाने पर शीघ्र ही चन्द्रमा रूपी पति को स्वीकार करने की इच्छा से लोकपवाद रूपी विषम भूमि को पार करने के लिए अंधकाररूप काली साड़ी धारण कर ली।
कवि रात्रि का स्वभाविक वर्णन करते हैं।

कलयिन शासनमत्र रात्रावहो न सा के बलकारिमात्रा।
विचारहीनां भुवमीक्षमाणो लभे प्रदेशं न मनागिवाणीः।।
(ज.म. 15/41)

अर्थात् रात्रि में चन्द्रमा चमक रहा है, सूर्य अस्त हो चुका है, पृथिवी पक्षियों के संचार से रहित है और अन्धकार की बहुलता से कहीं कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। कवि ने रात्रि में तारों की छटाओं का वर्णन भी किया है।

सन्ध्यामिषेणोत्कषणप्रतीतमस्ताविविधे निकषाश्मनीतः।
विक्रीय भानुं भरूपिण्डमानीतानीव खेनोडुकरूप्यकाणि।।
(ज.म. 15/42)

अर्थात् सूर्यास्त के पश्चात् आकाश में तारे छिटक रहे हैं जिससे ऐसा जान पड़ता है कि आकाश ने अस्ताचलरूपी कसौटी पर इस संध्या के बहाने कसकर सत्यापित सूर्यरूपी स्वर्ण पिण्ड को बेचकर उसके बदले नक्षत्र रूपी चाँदी के सिक्के प्राप्त किये हैं।

प्रभात वर्णन – कवि ने प्रातःकाल का मनोरम व स्वभाविक वर्णन प्रस्तुत किया है। अट्ठाहरवें सर्ग में प्रातःकाल की स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है।

सुप्ते विजित्य जगतां त्रितयं तु कामे लुप्ते त दीयधनुषो विरवे•ति वामे।
उप्ते रथान्नयुगचञ्चुपुटे•भिरामे•होरात्रकस्य मधुरे चरमे•त्रा यामे।।
मन्दत्वमञ्चति विधोर्मधुरे प्रकाशे
पर्याप्तिमिच्छति चकोरकृते विलासे।
सस्पन्द भावमधिगच्छति वारिजाते
सर्वत्र कीर्णमकरन्दिनि वाति वाती।।
(ज.म. 18/5,6)

अर्थात् कामदेव तीनों जगत् को जगतकर सो जाता है, कामदेव के धनुष की क्रूर टंकार लुप्त हो गई है, रात दिन का अन्तिम मनोहर प्रहर चकवा–चकवी के चञ्चुफुट में विलीन हो जाता है, चन्द्रमा का प्रशस्त प्रकाश मन्दता को प्राप्त हो जाता है, पक्षियों के द्वारा किया हुआ नृत्यादि हर्ष व्यापार समाप्त हो जाता है। कमल विकासोन्मुख हो जाते हैं, सर्वत्र पराग को बिखेरने वाली वायु बहती है।

इसके अतिरिक्त कवि ने प्रातः काल के समय होने वाली क्रियाशीलता का वर्णन इस प्रकार किया है।

वीरोदिते समुदितैरिति संवदामः
कल्पयप्रभाववशतः प्रतिबोधनाम।
सम्प्राप्तिं च मनुजैश्चतुराश्रमित्व–
मेकान्तवाद विनिवृत्तितयासि वित्त्वम्।।
(ज.म. 18/45)

अर्थात् मनुष्य प्रातःकाल के प्रभाववश प्रबोध को प्राप्त होकर एकान्तवास का परित्याग कर देते हैं अर्थात् विचारशील मनुष्य विचार करते हैं कि जब पक्षी भी घोंसलों से निकलकर ध्वनि करते हुए हो रहे है, तब हम मनुष्यों को भी एकान्त स्थान में निद्रा में निमग्न रहना अच्छा नहीं है, इसलिए मनुष्य भी प्रातःकाल के समय एकान्त को त्याग कर कार्य करने में तत्पर रहते हैं।

उद्यान वर्णन – जयोदय महाकाव्य में कवि ने प्रकृति का बहुत ही स्वभाविक वर्णन किया है। प्रथम सर्ग में उद्यान का वर्णन किया गया है।

पतिं यतीनां सुमतिं प्रतीक्ष्य तदातिथ्यविधानदीक्षम्।
समुद्भवत्कामशरप्रतान–मन्नीचकारौपवन प्रधानः।।

अर्थात् प्रसिद्ध उपवन श्रेष्ठ यतिराज को देखकर उनके आतिथ्य में संलग्न हो विकसित कामरूप फूलों के समूह को धारण कर रहा है।

मुनिराज को देखकर बकुल वृक्ष, कदम्बवृक्ष, आम्रवृक्ष आदि पोषित होकर पल्लवित हो रहे हैं।

कवि ने उद्यान में वृक्षों तथा पक्षियों का भी वर्णन किया है।
शिखरतस्तु पतन्ति बृहत्तरोः पदसरोरूहयोश्च जगद्गुरोः।
समुचया रूचया च शिवाश्रिया इव दृशां नभसो विभवाः प्रियाः।।
(ज.म. 1/93)

अर्थात् उद्यान में बहुत ऊँचे–ऊँचे धने वृक्ष होते हैं, वह वृक्ष फलों के गुच्छों से लदे हुए होते हैं। उसी प्रकार कवि ने भी ऐसी ही वृक्षों का वर्णन किया है। अत्यन्त ऊँचे अम्रादि वृक्ष के शिखर से फूलों के गुच्छे मुनिराज के चरणों में गिर रहे हैं। वे ऐसे लग रहे मानों आकाश से गिरते हुए मुक्ति लक्ष्मी के सुन्दर कटाक्ष हो।

पर्वत वर्णन – जयोदय महाकाव्य में कवि द्वारा चौबीसवें सर्ग में पर्वतों का वर्णन किया गया है। कवि ने काव्य में सुमेरू पर्वत, नील और निषध पर्वत का वर्णन किया है तथा कैलास पर्वत का तो बहुत ही सुन्दर वर्णन कवि ने किया है।

समस्ति शिल्पं यदयं स्वयंभुवो•र्द्धमर्द्ध न भसो•पि संचयात्।
चयाश्रयो भूरिदरीमयो•सकौ स कौ पुनः को•स्य गिरेस्तु यः समः।।
(ज.म. 24/20)

कैलास के स्वरूप के बारे में कवि कहते हैं यह पर्वत अर्धभाग पृथिवी का और अर्धभाग आकाश का लेकर निर्मित है, यह प्रकृति का कलारूप है। यह संचय का आश्रय लेने के कारण बहुत भारी गुहाओं से युक्त है।

कवि ने सुमेरू पर्वत का वर्णन किया है।

परीतपीताम्बरलुप्तदेहरूक् करद्वयीप्रापितचक्रकम्बुकः।
विराजते विष्णुरिवाजतेजसा गिरी रवीन्दूद्वयतः स उद्वहन्।।
(ज.म. 24/5)

अर्थात् सुमेरू पर्वत जो स्वकीय स्वाभाविक तेज से दोनों ओर सूर्य तथा चन्द्रमा को धारण कर रहा था मेरू पर्वत विष्णु व कृष्ण नारायण के समान सुशोभित हो रहा था, जिनके शरीर की कान्ति धारण किए हुए पीताम्बर से लुप्त हो गयी और जो हाथों से सुदर्शन चक्र तथा पाञ्चजन्य श० को धारण कर रहे थे।

कविने कैलास व सुमेरू पर्वत के अतिरिक्त नील व निषध नामक दोनों पर्वतों का वर्णन किया है।

यदन्तिके द्वौ द्विरदौ विमुञ्चतो जलोरूधारामपि नील निषधो।
रवीन्दुबिम्बे द्वयतो•ब्जदर्पण वहन्नसौ संलभते रमाकृतिम्।।
(ज.म. 24/2)

अर्थात् ये दोनों पर्वत सुमेरू के वाम और दक्षिण भाग की और विद्यमान है। नील और निषध पर्वतरूपी दो हाथी जिसके समीप नदियों के बहाने जल की मोटी धारा छोड़ रहे है। जो दोनों ओर से सूर्य और चन्द्र बिम्बरूपी कमल एवं दर्पण को धारण कर रहा हैं। ऐसा वह सुमेरू लक्ष्मी की आकृति को प्राप्त हो रहा था।

आकाश वर्णन – कवि ने जयोदय महाकाव्य में आकाश का स्वाभाविक वर्णन किया है। अट्ठारहवें व पन्द्रहवें सर्ग में कवि ने आकाश का वर्णन किया है।

लुप्तोरूरत्ननिचये वियतीव ताते चन्द्रे तु निष्करदशामधुना प्रयाते।
धूके•पकर्मनयने द्रुतमेव जाते मन्दं चरव्यभिगमाय किलेति वाते।।
(ज.म. 18/4)

अर्थात् आकाश को सबसे लिये आश्रय देने के कारण पिता के तुल्य बताया है। प्रातःकाल के समय आकाश की स्थिति को बताया है। आकाश का विशाल रत्नों का संग्रह लुप्त हो गया। पुत्र तुल्य जो चन्द्रमा था वह किरण रहित अवस्था को प्राप्त हो गया और रात्रि में विचरण करने वाले उलूक थे उनके नेत्र देखने में असमर्थ हो गये। इस प्रकार कवि ने चन्द्रोदय, रात्रि, सूर्योदय के समय आकाश की स्थिति का वर्णन किया है।

कवि ने महाकाव्य में आकाश का वर्णन करते हुए आकाश को समुद्र के समान बताया है।

आकाशनीरनिकरे मकरः कुलीरो
मीनो•ब्ज इत्यनुमतानि पदानि धीर।
यत्रानिमेषनिवहो विभवत्यपीति,
तस्यैव विद्रुमकृतेयमुषः प्रतीति।।
(ज.म. 18/80)

अर्थात् आकाश रूपी समुद्र में राशियों के रूप में मकर, मीन और चन्द्रमा ये वस्तुयें सर्वसंमत हैं। उसी आकाश रूप समुद्र में देव अथवा मत्स्यों का समूह भी सुशोभित है। उसी आकाश रूप समुन्द्र में मूंगा के द्वारा प्रातःकालीन लालिमा की गई है।

नदी वर्णन – कवि ने जयोदय महाकाव्य में नदियों का वर्णन भी स्थान–स्थान पर किया है। कवि ने यमुना नदी, गंगा नदी और जरती नदी का वर्णन किया है। कवि अष्टम सर्ग में यमुना नदी का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

मृतान्ननानेत्रपयः प्रवाहो मदाम्भसां वा करिणां तदाहो।
यो•भूच्चयो•दो•स्ति ममानुमानमुद्गीयते•सौ यमुनाभिधानः।।
(ज.म. 8/40)

अर्थात् युद्ध के समय मृत शत्रुवीरों की स्त्रियों के आँसुओं का जल अथवा हाथियों के मदजल का समूह बहा, आश्चर्य है कि वही 'यमुना नदी' के नाम से आज कहा जाता है। ऐसा मेरा अनुमान है।

यमुना नदी के अतिरिक्त गंगा नदी का वर्णन तेहरवें सर्ग में किया गया है।

विधुदीधितिवन्धुरा धरा–वलये व्याप्तिमती मनोहरा।
नृपतेस्तु मुदे नदी किण–स्थिरतेवाग्रिमवर्षपत्रिणः।।
(ज.म. 13/53)

अर्थात् भूमंडल पर फैलने वाली वह गंगा नदी चन्द्रमा की किरण के समान सफेद थी और देखने में मन को हरण करने वाली थी। अतः वह नदी हिमवान् पर्वत के यश की स्थिरता के समान प्रतीत होती थी।

पशु–पक्षी वर्णन – जयोदय महाकाव्य में कवि ने पशु–पक्षी का भी स्थान–स्थान पर वर्णन किया गया है। घोड़े, हाथी, ऊँट, अजगर, साँप, हरिण, मयूर, बारहसींगा, बगुला, कोयल आदि पशु पक्षी का वर्णन किया है। अष्टम् सर्ग में युद्ध के समय कवि ने घोड़े व हाथी का वर्णन किया है।

निम्नानि गन्धर्वशफैः कृतानि यत्राथ कौसुम्भकभाजनानि।
भृतानि रक्तैर्यमराण्णिशान्तसंव्यानरागार्थमिव स्म भान्ति।।
(ज.म. 8/27)

अर्थात् युद्ध मं घोड़ों के खुरों से जमीन में गड्डे हो गये और वीरों के रक्त से भर गये। ऐसा लगता है कि मानों यमराज की रानियों के वस्त्र रँगने के लिए कुसुम्भ से भरे पात्र ही हों।

हाथियों का भी वर्णन किया गया है।

रथमण्डलनिस्वनैः समकरिणां बृहितमानिजुह्वे।
पुनरत्र तुरन्नहैषितं स्वतितारं सुतरामराजत।।
(ज.म. 18/35)

अर्थात् उस सेना दल में रथों की आवाज के साथ–साथ हाथियों की चिंघाड़ भी बड़े जोर से हो रही थी, फिर भी घोड़ों की हिनहिनाहट तो बहुत जोरदार थी जो कि अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बतला रही थी। तैहरवें सर्ग में जब जयकुमार व सुलोचना के विवाह के पश्चात् अपने नगर लौटते हैं उस समय ऊँट, साँप, हरिण, मयूर, बारहसिंगा, बगुला आदि पशु पक्षियों का वर्णन कवि ने किया है।

युद्ध वर्णन/सैन्य वर्णन – कवि ने जयोदय महाकाव्य के सप्तम सर्ग व अष्टम सर्ग में युद्ध भूमि का स्वाभाविक वर्णन किया है। सुलोचना स्वयंवर में सुलोचना के द्वारा जयकुमार को वरण करने पर अर्ककीर्ति के क्रोधित होने पर अर्ककीर्ति के द्वारा युद्ध की घोषणा की जाती है। इसके पश्चात् जयकुमार व अर्ककीर्ति के बीच युद्ध होता है। कवि ने यहाँ युद्ध का स्वाभाविक वर्णन प्रस्तुत किया है –

उद्धूतसद्धूलिघनान्धकारे शम्पा सकम्पा स्म लसत्युदारे।
रणान्नणे पाणिकृपाण माला चुकूजुरेवं तु शिखण्डिबालाः।।
(ज.म. 8/8)

अर्थात् युद्ध भूमि के समय धूल उड़ रही थी। धूल के कारण मेघ की तरह अन्धकारच्छन्न विशाल युद्धभूमि में योद्धाओं के हाथों में कम्पमान तलवारों की माला चमक रही थी। किन्तु मोरों के बच्चे उन्हें बिजली समझकर केकावाणी बोल रहे थे।

इस प्रकार कवि ने युद्ध का वर्णन करते हुए युद्ध के अवसर पर अनेक प्रकार की सेना की रचना का वर्णन किया है।

सम्राजस्तुक् खलु चक्राभं बलवासं
मकराकारं रचयञ् श्रीपद्माधीट् च।
रणभूमावभ्रे च खगस्ताक्ष्यप्रायं,
यत्नं सङ्ग्रामकरं स्माञ्चति च प्रायः।।
(ज.म. 7/113)

अर्थात् अर्ककीर्ति ने अपनी सेना में चक्रव्यूह बनाया तो जयकुमार ने मकरव्यूह। आकाश में मेघप्रद विद्याधरने सेना का गरुड़व्यूह बनाकर रखा। इस तरह सभी संग्राम के लिए तैयार हो गये।

विवाह मण्डप वर्णन – कवि ने जयोदय महाकाव्य में दशवें सर्ग में विवाह मण्डप का बहुत ही सुन्दर व मनोरम वर्णन प्रस्तुत किया है।

विशालं शिखरप्रोतवसुसञ्चयशोचिषाम्।
निचयैस्तु सुनाशीर–व्योमयानं जहास यत्।।
(ज.म. 10/86)

अर्थात् विवाह मण्डप अत्यन्त विशाल था और वह ऊपर भाग में जड़े हुए रत्नों की राशि की क्रान्ति के समूह से इन्द्र के विमान की हँसी उड़ा रहा था।

कवि ने मण्डप में स्थित मनुष्यों का वर्णन किया है।

अर्कसंस्कृतकुड्येषु संक्रान्तप्रतिमा नराः।
विलोक्यन्ते स्फुटं यत्र चित्राया इव मञ्जुलाः।।
(ज.म. 10/89)

अर्थात् मण्डप में स्थित मनुष्य सूर्य से चमकने वाली दीवाली में प्रतिबिम्बित होकर मनोहर चित्रों के समान स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। नगर वर्णन – कवि ने प्रसंगवश अनेक नगरों का चमत्कारपूर्ण वर्णन किया है। कवि ने तृतीय सर्ग में काशी नगर का मनोरम वर्णन किया है।

काशी को स्वर्गपुरी के समान बताया है।

सुमना मनुजो यस्यां महिला सारसालया।
श्रीधरो•धीश्वरो यस्याः सा काशी रूचिरा पुरी।।
(ज.म. 3/30)

अर्थात् वह काशी बड़ी लुभावनी नगरी है। यहाँ के मनुष्य अच्छे मनवाले हैं, महिलायें श्रृंगाररस से पूर्ण लक्ष्मी ही है। जहाँ का राजा श्रीधर लक्ष्मी धारक कुबेर के समानहै।

कवि ने काशी नगरी के अतिरिक्त अयोध्या नगरी का भी मनोरम वर्णन प्रस्तुत किया है।

स्वमुपपयोधदेशं चलदुज्जध्वजनिवसनविशेषम्।
त्रयपेव वोन्नयन्तीं श्रियाखिलं विश्वमपि जयन्तीम्।।
(ज.म. 20/3)

अर्थात् वह अयोध्या नगरी मेघमण्डल के पास फहराती हुई ध्वजा के वस्त्र को वायु से ऊपर को उत्साहित करती थी। इससे ऐसी जान पड़ती थी जैसे कोई स्त्री लज्जावश अपने स्तनमण्डल के समीप वस्त्र को उत्साहित करती रहती है। साथ वह नगरी अपनी शोभा से समस्त

इस प्रकार कवि ने काशी व अयोध्या का वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त कलिंग, कांची, कश्मीर, अंगदेश, मालवदेश, कुरु, कर्णाटक, बन्न देश, पुण्डरीकिणी, जम्बूपुर, हस्तिनापुर, इन नगरों का भी वर्णन जयोदय महाकाव्य में किया गया है।

मनुष्य जीवन व स्वभाव वर्णन – आचार्य भूरामल शास्त्री ने पच्चीसवें सर्ग में मनुष्यों के जीवन व स्वभाव का वर्णन किया है। कवि ने विषयों में आसक्त, निर्बुद्धि व ज्ञानी मनुष्य के स्वभाव का वर्णन किया है। विषयों में आसक्त मनुष्य के विषय में कवि कहते हैं –

मधुरसा करटस्य हि निम्बिका धनमहो दुरितस्य कपार्हिका।
विडशनं हि किरे रसनन्दनं विषयतो हि तथा हृदि रञ्जनम्।।
(ज.म. 25/21)

अर्थात् कौए के लिए निबोरी मीठी होती है और द्ररिद्र व्यक्ति के लिए कौड़ी ही धन होता है और ग्राम के शूकर को विष्ठा का भक्षण आनन्दकारी होता है उसी विषय सामग्री से रागी मनुष्य के हृदय में आनन्द होता है।

निर्बुद्धि मनुष्य के विषय में कवि ने कहा है –

विषमयस्तमतिः प्रति मुह्यति नहि विपन्न इतो•पि विमुञ्चति।
मुहरहो स्वदिते ज्वलिताधरः स्विदभिलाषपरोमरिची नरः।।
(ज.म. 25/23)

अर्थात् निर्बुद्धि मनुष्य विषयों से विपत्ति में पड़ता हुआ भी उसके प्रति मोह करता है। जैसे तीखा खाने का अभिलाषी मनुष्य ओठ के जलने पर भी बार–बार मिर्च का स्वाद लेता है।

कवि ने विवेकावान् अर्थात् ज्ञानी मनुष्य के विषय में कहा है।

सपदि मन्थगुणेन गवीश्वरो यदिव दहन उपैति नवोद्धतम्।
परमपास्य गुणी सहसात्मनो रासेति रूपमवैति नवोद्धतम्।।
(ज.म. 25/63)

अर्थात् जिस प्रकार गायों का स्वामी मन्थन के प्रयोग द्वारा दही से नवनीत को प्राप्त करता है उसी प्रकार विवेकवान् मनुष्य अपने साहस से शीघ्र ही जड़रूप पदार्थ को को छोड़कर आत्मा के अभूतपूर्वक रूप को प्राप्त करता है।

नायिका वर्णन – महाकाव्य की प्रधान नायिका 'सुलोचना' है। कवि ने जयोदय महाकाव्य में सुलोचना का वर्णन प्रस्तुत किया है।

तस्यैका तनया राज्ञो राजते कौमुदाश्रया।
सुप्रभाकुक्षितो जाता चन्द्रिकेव सुलोचना।।
(ज.म. 3/37)

अर्थात् यह काशी के राजा अकम्पन की पुत्री, महारानी सुप्रभा की कोख से उत्पन्न और चन्द्रमा की तरह पृथ्वी पर प्रसन्नता की धारा बहाने वाली है। यह सुलोचना व सुलोचना नाम से सुशोभित है। कवि ने यहाँ सुलोचना के सम्पूर्ण चरित्र का वर्णन संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

गुणावदाता सुवयः स्वरूपा•स्य राजहंसी कमलानुरूपा।
सा कौमुदस्तोममयं विशेषरसाचितं मानसमाविवेश।।
(ज.म. 1/74)

अर्थात् राजहंसी के समान गुणों से निर्मल, लक्ष्मी के समान रूपवाली और श्रेष्ठ युवती वह सुलोचना सदा प्रसन्न रहने वाले सरसता युक्त उस जयकुमार के मन आ बसी।

इस प्रकार कवि ने सुलोचना को मर्यादा से युक्त, ईश्वर में आस्था, उत्तम गुणों से युक्त, निष्पाप व तेजस्वी, आदर्श व पवित्र आचरण वाला, मधुर व उदार विचारों से युक्त, प्रसन्नता सयुक्त, परिश्रमी, धर्मिणी, सौन्दर्य से युक्त आदि इन सभी गुणों से सम्पन्न बताया हैं।

शोध पत्र के निष्कर्ष को निम्न बिन्दुओं के आधार पर देख सकते है :–

1. *जयोदय महाकाव्य में प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण किया गया है। सूर्योदय वर्णन, प्रातःकालीन वर्णन, रात्रि वर्णन, चन्द्रोदय वर्णन, उद्यान वर्णन, पशु–पक्षी वर्णन आदि का मनोरम व स्वभाविक वर्णन प्रस्तुत है।*

2. *कवि ने सप्तदश व अष्टादश सर्ग में युद्ध वर्णन को दर्शाया है। सुलोचना व जयकुमार के स्वयंवर के पश्चात् अर्ककीर्ति युद्ध करने के लिए उद्यत होते हैं। जयकुमार व अर्ककीर्ति के मध्य युद्ध के समय कवि ने युद्ध का स्वभाविक सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।*

3. *कवि ने नगरों का प्रसंगवश वर्णन प्रस्तुत किया है। काशी व अयोध्या नगरी का मनोरम वर्णन प्रस्तुत किया गया है।*

4. *कवि ने सुलोचना नायिका के स्वरूप, गुण व विशेषताओं का स्थान–स्थान पर मनोरम वर्णन किया है।*